मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

कद्दू वर्गीय सब्जियों में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबन्धन

राधा बिनोद सिंह, श्वेता पटेल, पुष्पेन्द्र कुमार शुक्ला एवं आकाश कुमार चौधरी
कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या– 224229 (उ0प्र0), भारत
संवादी लेखक का ई–मेलः patel19.rk@gmail.com

जायद ऋतु की सब्जियों में कद्दू वर्गीय सब्जियों का प्रमुख योगदान होता है, कद्दू वर्गीय सब्जियों के अन्तर्गत मुख्यतः कद्दू, लौकी, खीरा, ककड़ी, तोरई एवं करेला इत्यादि प्रमुख हैं। इस कुल की सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है, जिससे इनकी फलत प्रभावित हो जाती है। अतः इन सब्जियों की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए इनके हानिकारक कीटों को पहचान कर उनका प्रबंधन करना आवश्यक हो जाता है। इसलिए इनके प्रबंधन हेतु समन्वित कीट प्रबंधन अपनाना चाहिए।

1. **कद्दू का लाल भृंग**:– यह कीट चमकीले लाल रंग का होता है। इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही कद्दूवर्गीय सब्जियों को हानि पहुंचाते हैं। इस कीट के वयस्क पौधों के पत्तियों में टेढ़े–मेंढ़े छेद करके जबकि शिशु पौधों की जड़ों, भूमिगत तनों एवं भूमि से सटे फलों तथा पत्तों को नुकसान पहुंचाते हैं।

कद्दू का लाल भृंग से प्रभावित पौधा

प्रबंधन.–

- फसल की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना चाहिए।
- फसल की बुवाई उचित समय पर करना चाहिए।
- खेत को खरपतवार एवं फसल अवशेषों से मुक्त रखना चाहिए।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों के खेतों में निम्बोली के पाउडर का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- उपरोक्त उपायों के बावजूद कीट का स्तर आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने लगे तो डाईमेथोएट 30 ई. सी.की500 मिली. मात्रा या मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. की 500 मिली. मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

2. **कद्दू की फल मक्खी**:–यह कीट कद्दूवर्गीय सब्जियों के लिए अत्यधिक हानिकारक कीट है, इस कीट की मादा मक्खी फल में छेद करके फल के अन्दर अण्डे देती है। जिससे फल टेढ़े–मेढ़े होकर सड़ने लगते हैं।

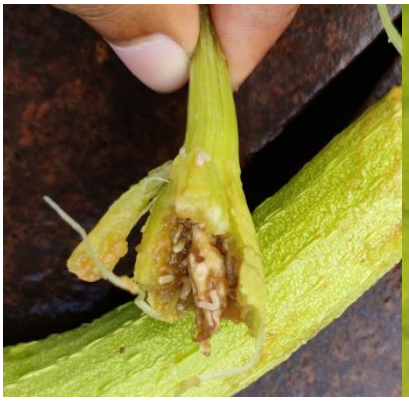
फल मक्खी का गिडार

फल मक्खी का वयस्क

फल मक्खी से प्रभावित फल

प्रबंधनः–

- फलों की तुड़ाई सही समय पर करना चाहिए।
- फल मक्खी से ग्रसित फलों को एकत्रित कर जमीन में दबा देना चाहिए।
- पौधों पर राख का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- फल मक्खी की निगरानी हेतु कद्दूवर्गीय सब्जियों में क्यू–ल्युर ट्रेप लगाना चाहिए।
- फल मक्खी के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए 1.5 मिली. मिथाइल यूजीनाल, 2 मिली.क्विनॉलफॉस 25 ई.सी. को 1 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार कर ले। इस तरह तैयार घोल की 250 मिली. की दर से किसी पात्र में लेकर, 8 से 10 जगह प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में रख देना चाहिए।

3. **हड्डा भृंगः–** इसके शिशु कीट पीले रंग के तथा प्रौढ़ भूरे लाल रंग के होते हैं। इनके पीठ पर 14–28 काले रंग के गोल धब्बे होते है। इसकी मादा कीट पत्तों पर पीले रंग के अण्डे झुण्ड में देती हैं। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों को खाते हैं जिससे पत्तियों पर जालीदार संरचना बन जाती है।

हड्डा भृंग का लार्वा

हड्डा भृंग का वयस्क

प्रबंधनः–

- प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में कीट के अण्डों, शिशुओं तथा वयस्कों को पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- खेत में गिरी हुई पत्तियों, प्रभावित फल इत्यादि को इकट्ठा कर जलाकर नष्ट करते रहना चाहिए।
- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।

- उपरोक्त उपायों के बावजूद कीट का स्तर आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर कद्दू के लाल भृंग के प्रबंधन के लिए बताए गए कीटनाशकों में से किसी एक का प्रयोग करना चाहिए।

4. **पर्ण सुरंगकः–** इस कीट के वयस्क पीले रंग के एवं शिशु सूक्ष्म बिना पैर के नारंगी पीले रंग के होते हैं। इस कीट के शिशु पत्तियों में सांप के आकार की सुरंगें बनाकर अंदर से क्लोरोफिल खाते हैं। जिससे पौधे के हरे भाग में कमी होने के कारण प्रकाश संश्लेषण की क्रिया बाधित हो जाती है जिससे उत्पादन प्रभावित हो जाता है।

पर्ण सुरंगक से प्रभावित पत्ती

प्रबंधनः–

- इस कीट का प्रकोप सूखी भूमि पर अधिक होता है अतः आवश्यकतानुसार समय–समय पर पानी देते रहना चाहिए।
- प्रारंभिक अवस्था में क्षतिग्रस्त पत्तियों को कीटों सहित तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए।
- नत्रजन की समुचित मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।
- यदि उपरोक्त उपायों से लाभ न मिल रहा हो तो क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल (कोराजन) 18.5 एस.सी. की 0.5 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़कना चाहिए।

5. **लाल माइट (बरुथी कीट):**छोटे आकार के लाल रंग के इस वयस्क कीट के शरीर पर काले रंग के धब्बहोते हैं।इस कीट के शिशु एवं वयस्क रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं। जिसके कारण पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है। शुष्क मौसम मे इस कीट का प्रकोप अधिक होता है।

लाल माइट का वयस्क

लाल माइट से प्रभावित पौधा

प्रबंधनः–

- समय–समय पर पौधों पर पानी की फुहार करने से इनका प्रकोप कम हो जाता है।
- खेत में नीम के बीजों के पाउडर का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- कीट प्रतिरोधी किस्मों की बुवाई करें।
- फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- मित्र कीटों को संरक्षित करना चाहिए।
- इसके नियंत्रण के लिए स्पिरोमेसिफेन 240 एस.सी. की 200 मिली. मात्रा को 200 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़कना चाहिए।